अध्याय 7

स्वदेश में गांधीजी

गांधीजी ने स्वदेश लौटते ही कोलकाता कांग्रेस में भाग लेने का निश्चय किया। वे उसी गाड़ी से रवाना हुए, जिसमें सर फिरोजशाह मेहता और दिनशा बाछा (कांग्रेस अध्यक्ष) यात्रा कर रहे थे। गांधीजी चाहते थे कि कांग्रेस दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की दुर्दशा पर कोई प्रस्ताव पास करें।

कोलकाता पहुँचने पर वे लोकमान्य तिलक के साथ ठहराए गए। गांधीजी नेता बनकर नहीं रहना चाहते थे। वे कार्यकर्त्ता के रूप में कांग्रेस में भाग लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने स्वागत समिति के अधिकारियों से क्लर्की का काम ले लिया और दत्तचित्त हो निर्दिष्ट कार्य करने लगे। उन्होंने स्वयंसेवकों से झाड़ू लगाने और पाखाना साफ करने को कहा। स्वयंसेवक ऐसा विचित्र आदेश मानने के लिए तैयार नहीं हुए तब गांधीजी स्वयं सफाई के काम में जुट गए। गांधीजी कहते नहीं थे, करते थे।

जब कांग्रेस का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ, तब उन्होंने अपनी बात कहने के लिए अध्यक्ष से समय माँगा। अध्यक्ष ने केवल पाँच मिनट दिए। इतने कम समय में वे अफ्रीका के भारतीयों की समस्या पर पर्याप्त प्रकाश न डाल सके। उन्हीं बड़ी निराशा हुई। कांग्रेस को उन्होंने एक निष्प्राण संस्था के रूप में देखा, उसमें अंग्रेज़ों और अंग्रेज़ियत का प्रभुत्व उन्हें अखरा। उन दिनों कांग्रेस का अधिवेशन प्रतिवर्ष तीन दिन तक होता था, शेष तीन सौ बासठ दिनों वह सोई रहती थी।

कोलकाता में गोखले के साथ महीने भर रहे। इन्होंने अपने कलकत्ता (कोलकाता) निवास में वहाँ के नेताओं से भेंट की। वे काली-मन्दिर में भी गए। वहाँ पशु-बलि के दृश्य ने उन्हें पीड़ा पहुँचाई। थोड़े समय के लिए उन्होंने बर्मा देश की भी यात्रा की।

भारतीय जनता और जीवन का अध्ययन करने की दृष्टि से गांधीजी ने कोलकाता से राजकोट लौटते समय तीसरे दर्जे में यात्रा की। वे बनारस (वाराणसी), आगरा, जयपुर और पालनपुर में एक-एक दिन धर्मशालाओं में ठहरे। बनारस में वे एक पण्डे के यहाँ ठहरकर धार्मिक जनता की मनोदशा का अध्ययन करते रहे।

राजकोट में वे कुछ महीने वकालत करने के पश्चात् पुनः बंबई (मुंबई) गए और वहाँ वकालत करने लगे। वहाँ भी वे बीमारों की चिकित्सा अपने ढंग से करते थे। उन्हें प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति पर विश्वास था। अफ्रीका में उन्होंने कई बीमारों को अच्छा किया था।

एक बार उनका पुत्र मणिलाल विषम ज्वर से बीमार हो गया। निमोनिया की आशंका होने लगी। तब उन्होंने एक पारसी डॉक्टर को बुलाया, जिसने चिकित्सा के समय अण्डे और मांस का शोरबा देने की सलाह दी। परन्तु गांधीजी ने डॉक्टर की सलाह नहीं मानी। उन्होंने अपनी ही चिकित्सा से अर्थात् जल-चिकित्सा से मणिलाल

को स्वस्थ कर दिया। चिकित्सा के काल में वे परमात्मा से प्रार्थना भी किया करते थे। जब मणिलाल स्वस्थ हो गया, तो उन्होंने उस कुन्द मकान को छोड़कर खुला हवादार मकान लिया और उसमें रहने लगे। बंबई (मुंबई) में उनकी वकालत जम ही रही थी कि दक्षिण अफ्रीका के मित्र ने उन्हें पुनः अफ्रीका आने के लिए तार दिया। वे जानते थे कि उनके गए बिना उनके द्वारा चलाया गया आन्दोलन आगे नहीं बढ़ पाएगा और भारतीय दयनीय दशा में ही ज़िन्दगी बिताते रहेंगे। दिसम्बर, 1902 में उन्होंने तीसरी बार नैटाल की ओर प्रस्थान किया।

अभ्यास

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. गांधी जी कहने की अपेक्षा.....पर जोर देते थे।
2. गांधी जी का .....चिकित्सा पद्धति पर विश्वास था।
3. गांधी जी तीसरी बार नैटाल सन् .....में गए थे।

प्रश्न-2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. यह कैसे सिद्ध करोगे कि गांधी में सेवा भावना प्रबल थी?
2. कलकत्ता (कोलकाता) कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेकर गांधीजी को निराशा क्यों हुई?

अब करने की बारी

1. वर्तमान में चिकित्सा की कौन-कौन सी पद्धतियाँ प्रचलित हैं? लिखिए।
2. अपने अध्यापक के साथ मिलकर कोई योजना बनाइए, जिसमें आप दीन-दुखियों की मदद कर सकें।

❑❑